रेखाचित्र

रेखाचित्र एक आधुनिक विधा है जो अन्य आधुनिक विधाओं की भाँति पश्चिम से हिंदी में प्रतिष्ठित हुई है। रेखाचित्र के लिए अंग्रेजी का 'Sketch' शब्द समानार्थी है। संस्मरण, रिपोतजि निबंध जीवन आदि क गद्य-विधाओं के विकास के साथ रेखाचित्र का भी विकास हुआ। वैसे रेखाचित्र आधुनिक विधा है, किन्तु प्राचीन ग्रंथों में व्यक्ति के बाहरी चित्रण के शब्द-चित्र भी रेखाचित्र के एक रूप की हष्टि से देखे जा सकते हैं । यद्यपि उसमें भावनात्मक रूप से व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का स्वरूप आधिक रहा है। लेकिन उस प्रकार के व्यक्तिचित्रण को हम आधुनिक रेखाचित्र के साथ नहीं जोड़ सकते ।

आधुनिक रेखाचित्र मूलतः चित्रकला का शब्द है। चित्रकला में रेखाओं का अधिक महत्व होता है। जिस प्रकार चित्रकार चित्र बनाने के लिए आड़ी-तिरछी पर सजीव रेखाओं का प्रयोग करता है उसी प्रकार रेखाचित्र लिखनेवाला शब्द चित्रों द्वारा जीवन की विविध घटनाओं, व्यक्तियों और दृश्यों का ऐसा सजीव चित्र उपस्थित करता है कि पाठक सम्मुख वह व्यक्ति, स्थान, वातावरण का प्रसंग साकार हो उठता है। गद्य में लिखे गये इसी चित्र को रेखाचित्र कहते है । रेखाचित्रकार अपने मन में छाई हुई स्मृति रेखाओं को और विगत अनुभवों को कला की तूलिका से स्वानुभूति के रंग में रंगकर सजीव शब्द चित्र का रूप देता है। रेखाचित्र की सफलता शब्दों और वाक्यों के सफल गुम्फन पर निर्भर है। उसे कम से कम शब्दों में तीव्र एवं मर्मस्पर्शी भाव व्यंजना करनी पड़ती है। पूर्ण वाक्य के स्थान पर वाक्य खंड से काम चलाया जा सकता है। इसे पढ़कर पाठक यह जान ले कि वह व्यक्ति अपने रुप तथा आकार में कैसा है? रेखाचित्रकार को अंत्यन्त कठोर साधना का पथ अपनाने की आवश्यकता है। वह ही एकमात्र ऐसा कलाकार है जो अपने चारों ओर फैले विस्तृत समाज के किसी भी अंग तथा पक्ष का चित्रण अपनी लेखनी-तूलिका से ऐसा सजीव करता है कि पाठक यह अनुभव करने लगता है कि मैं वर्ण्य विषय के अत्यंत सान्निध्य में हूँ । वह प्रकृति की जड अथवा चेतन किसी वस्तु को अपने शब्दशिल्प से सजीव कर देता है। जिस आदमी को जीवन के विविध अनुभव प्राप्त नहीं हुए जिसने आँख खोलकर दुनिया को नहीं देखा, जिसे कभी जीवन संग्राम में जूझने का अवसर नहीं मिला, जो संसार के भले-बुरे आदमियों के संसर्ग में नहीं आया। मनोवैज्ञानिक घात-प्रतिघातों का जिसने अध्ययन नही किया और जिसने एकान्त में बैठकर जिन्दगी के भिन्न-भिन्न प्रश्नों पर विचार नहीं किया भला वह क्या सजीव चित्रण कर सकता है ?

रेखाचित्रकार की कला में भी सत्ता होनी चाहिए। उसकी सबसे बड़ी सफलता यह है कि व्यक्ति अथवा वस्तु विशेष का चित्रण करता है उसे पहले अपने अन्तर- दर्पण में प्रतिच्छायित कर ले । यदि उसने ऐसा किया तो उसकी कला औरभी निखर उठेगी। इसलिए रेखाचित्र कला, अनुभूति और सामाजिक घटनाक्रम का अपूर्व संगम है।

परिभाषाएँ :--

रेखाचित्र को अनेक विद्वानोनें परिभाषाओं में बाँधने का प्रयास किया है जो निम्नानुसार है---

1] विनयमोहन शर्मा **:-** " रेखाचित्र में व्यक्ति, घटना या दृश्य का अंकन होता है। "

2] डॉ. नगेन्द्र **:--** "रेखाचित्र ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें रेखाएँ हों, पर मूर्त रूप अर्थात उतार-चढ़ाव । दूसरे शब्दों में कथानक का उतार-चढ़ाव आदि ना हो। तथ्यों का उद्घाटन मात्र हो"

3] शिवदानसिंह चौहान **:--** "कला के अंदर रेखाचित्र की स्वतंत्र सत्ता है, उसे पढ़ने के बाद पाठक समाज या व्यक्ति की जीवनधारा के अगले मोड-प्रवाहों को जानने की आवश्यकता नहीं रहती। वह उस पूरी तस्वीर को पढ़कर संतुष्ट हो जाता है।"

By Dr. Sangita Chitrakoti

4] हिन्दी साहित्य कोष:**--** "रेखाचित्र किसी व्यक्ति वस्तु घटना अथवा भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी भावभूमि है एवं सजीव अंकन है।"

रेखाचित्र के तत्व **:--** विद्वानोंने रेखाचित्र के तत्व देने का प्रयास किया है। तत्व इस प्रकार है–

1) पात्र अथवा वस्तु **:--** रेखाचित्र में वर्ण्य विषय के रूप में एक व्यक्ति को, मानवेतर प्राणी को या किसी जड़ वस्तु को लिया जाता है और फिर उनका रेखांकन करते हुए उस व्यक्ति, मानवेतर प्राणी या जड़ वस्तु का प्रारंभिक चित्र निर्मित हो जाता है | व्यक्ति, प्राणी अथवा वस्तु के स्वरूप की उद्भावना के लिए जिन-जिन बातों के विवेचन की आवश्यकता होती है उनका उल्लेख किया जाता है। इस वर्णन से वर्ण्य विषय की बाहरी रूपरेखा का संकेत मिलने लगता है। इस प्रकार के विवेचन में रेखाचित्र का पात्र अथवा वस्तु की सूक्ष्म रेखाओं का अंकन करता है और उसके अंतर व बाह्य व्यक्तित्व को उभारने की चेष्टा करता है। इस प्रकार के चित्रण में रेखाचित्र को प्रभावी बनाने के लिए उस वस्तु की सूक्ष्म विशेषताओ, क्रियाकलापों और आचरणों का उल्लेख किया जाता है और यह विवेचन जीवंत दिखाई देने लगता है।

2) परिवेश **:--** वर्ण्य विषय किसी स्थान विशेष में विद्यमान रहता है उसके आसपास की कुछ परिस्थितियाँ होती है। ये पार्श्ववर्ती भाग गतिशील नहीं होते। वर्ण्य विषय के साथ फिर भी सम्पृक्त रहते हैं। उसके बिना पात्र अथवा वस्तु का अस्तित्व गोचर नहीं होता। रेखाचित्रकार उन स्थायी संबंध रखने वाले अंशों का उल्लेख करता है जो परिवेश से जुड़े रहते है।

3) जीवन दर्शन **:--** रेखाचित्र की संक्षिप्त परिधि में जो कुछ भी वर्णित होता है। उसमें जीवन की अभिव्यक्ति हो जाती है। यदि वर्ण्य विषय वस्तु या प्राणी है तो मानव जीवन के साथ उसके संबंध पर प्रकाश डालना अनिवार्य हो जाता है। रेखाचित्र में किसी ऐसी वस्तु का चित्र उपस्थित करना उपादेय नहीं जिसके साथ मानव ने अभी तक अपना किसी प्रकार का संबंध उपस्थित नहीं किया है। यह संबंध व्यावहारिक भी हो सकता है अथवा रागात्मक भी। इस संबंध की प्रेरणा रेखाचित्र के मूल में निहित रहती है। यदि वर्ण्य विषय कोई व्यक्ति है तो उसका जीवन के साथ संबंध होने से रेखाचित्र में जीवन व्याख्या अनायास ही आ जाती है। केवल अपनी अनुभूतियों, मानसिक प्रतिक्रियाओं, मान्यताओं और आदर्शों को उसी व्यक्ति के माध्यम से जो अभिव्यक्ति करने लगता है। एक समालोचक के शब्दों में – " रेखाचित्र आज के क्रान्तिकारी युग की साहित्यिक अभिव्यक्तियों का ज्वलंत प्रमाण है। जीवन की विभिन्न विभिन्न क्रांति प्रतिक्रियाओं को सीधा स्वर देने में भी रेखाचित्रों का भारी प्रयास है।"

4) भाषा **:--** रेखाचित्रकार को भाषा पर पूर्ण अधिकार रखना चाहिए। इसीसे इसकी अभिव्यक्ति में सौष्ठव दिखाई देता है। उसे इसके लिए सूक्ति शैली या सूत्रात्मक भाषा का आश्रम लेना पड़ता है। उसे ऐसे शब्दों की योजना करनी पड़ती है कि पाठक की आँखों के समक्ष उस वस्तु या पात्र का संश्लिष्ठ बिम्ब उभरकर आए। उस समय पाठक यह अनुभव करता है कि वह उस वस्तु अथव व्यक्ति के अत्यंत समीप है। वस्तु या व्यक्ति के सानिध्य की अनुभूति करा देना ही रेखाचित्रकार की भाषा शक्ति पर निर्भर करता है। इसी शक्ति के सहारे वह प्रकृति की किसी भी जड़ वस्तु को सजीव करता है। इस प्रकार भाषा वह मूल तत्व जिससे रेखाकन सजीव हो उठता है। रेखाचित्रों में सामान्यतः तीन प्रकार की भाषा दिखाई पड़ती है- सरल, अलंकृत तथा मिश्र | मिश्र भाषा में चित्रोपमता होनी चाहिए व शब्द शक्तियों का उचित तथा अनुकूल प्रयोग होना चाहिए ।

5) शैली **:--** शैली की दृष्टि से संवेदनशील दृष्टि, यथार्थ अनुभूति सूक्ष्म निरीक्षण और चित्रात्मकता रेखाचित्र को रूप देते है।

अ**]** संवेदनशील दृष्टि **:--** वैसे तो साहित्य की हर विधाके लिए संवेदनशीलता आवश्यक है किन्तु रेखाचित्र में क्योंकि व्यक्ति के साथ अभिव्यक्ति संबंध जुड़ा होता है, इसलिए संवेदना का प्रसार अधिक होता है। हिंदी के रेखाचित्र कारों महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसी दास चतुर्वेदी, विनयमोहन शर्मा आदि ने अत्यंत साधारण लोगों का रेखाचित्र प्रस्तुत करते हुए पूरे परिवेश को उकेरते हुए, व्यवस्था के विधि-विधानों के पक्ष-विपक्ष में भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। महादेवी वरमा ने अतीत के चलचित्र और

स्मृति की रेखाओ में तथा-कथित निम्न वर्ग के लोगों की रेखाएँ अंकित करते हुए उस व्यवस्था के प्रति भी चोट की है के जो संपन्न के सामने हाथ जोड़ती हुई विपन्न का शोषण करती है।

आ] यथार्थ अनुभूति :-- रेखाचित्र में जो भी होता है वह यथार्थ की अभिव्यक्ति है। उसमें देखे हुए और भोगे हुए, क्षण जो किसी व्यक्ति के साथ जुड़े है, महत्वपूर्ण हो उठते हैं। रेखाचित्र में कहानी की तरह कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं और न कलात्मकता की आवश्यकता है जो कहानी के लिए आवश्यक है। वहाँ माटी की मुरते या बोलती प्रतिमाएँ जीवंत हो उठती हैं। अतीत के चलचित्र में महादेवी ने लिखा है - " मेरे जीवन की परिधि के भीतर खड़े होकर चारित्र जैसा परिचय दे पाते हैं वह बाहर रूपान्तरित हो जायेगा - फिर जिस परिचय के लिए कहानीकार अपने कल्पित पात्रों को वास्तविकता से सजाकर निकल लाता है, उसी परिचय के लिए मै अपने पथ के साथियों को कल्पना का परिधान पहनाकर दूरी की सृष्टि क्यों करती ?।" इस कथन से स्पष्ट है कि रेखाचित्र यथार्थ के निकट ही नहीं पथ के साथियों के यथार्थ का रेखाओं में अंकन है।

इ] सूक्ष्म निरीक्षण और चित्रात्मकता :-- स्वभावतः शब्द-चित्रात्मकता रेखाचित्र का प्राण है। किन्तु उसके साथ सूक्ष्म निरीक्षण भी आवश्यक होता है। लेखक इस सूक्ष्म निरीक्षण से ही व्यक्ति के विषय में अपनी बात कहता हुआ पूरे परिवेश को एक बिम्ब के रूप में प्रस्तुत करता है। हिंदी के अधिकांश महत्वपूर्ण रेखाचित्रों में व्यक्ति के सूक्ष्म निरीक्षण के साथ उससे जुड़ी हुई सभी बातों का विवरण वर्णन होता है।

6) **उद्देश्य:--** रेखाचित्रों में उद्देश्य उपदेश की भाँति ऊपर से थोपा नहीं जाता। वरन रचना के भीतर समाया रहता है। रेखाचित्र का एकमात्र उद्देश्य है लेखक के संपर्क में आए व्यक्ति विशेष अथवा देखे गए दृश्य का अधिक से अधिक मर्मस्पर्शी एवं भावपूर्ण अंकन करना |